महासमर 2019

1977 लोकसभा चुनाव में इंदिरा गांधी की जबरदस्त हार के तुरंत बाद हुए विधान सभा चुनावों में रायबरेली की सात सीटों में से छः सीट जीतीं। वोटरों की इस प्रतिकृया पर बी.बी.सी. लंदन ने कहा था- "भारतीय वोटर अशिक्षित होते हुए भी वोट करने का विवेक है"

पिछले चुनावों में भारतीय वोटरों ने ऐसी सूझबूझ का एक बार फिर से परिचय दिया। वह प्रादेशिक और राष्ट्रीय जरूरतों में विवेक करने में सक्षम दिखी। प्रादेशिक मुद्दों पर जिन प्रदेशों में उन्होंने कुछ समय पहले ही सरकार बदली थी उन्हीं सूबों में भा॰ ज॰ पा॰ को पुनः प्रचंड मत से जिता कर राष्ट्रिय हितों को प्राथमिकता दी।

2019 के चुनाव से निकलते संदेश:-

राष्ट्र गौरव और राष्ट्र सुरक्षा:- पिछले सुरक्षा सौदों में घपलों के चलते भारतीय सेना की प्रहार क्षमता में निरतर ह्रास, पार्लियामेंट पर आक्रमण मुंबई के 9/11 का उचित प्रतीकार न किया जाना , जनता की चिंता का विषय रहा है। वर्तमान नेतृत्व द्वारा सेना को प्रतिकार हेतु खुली छूट दे दी। प्रतिकार की छूट मिलते ही भारतीय सेना के अप्रतिम शौर्य से जहाँ विश्व में भारत का मान बढ़ा। इस उपलब्धि ने जनता का मनोबल और सरकार पर जनता का विश्वास बढ़ाया।

जातीय समीकरणों के ढहते किले:- संख्याओं के आंकड़ों के पर आधारित स्वयंभू जातीय ठेकेदारों के दिन लद गए। इस बार जनता ने जातीयता के कुचक्र के बाहर निकल कर जमीन पर किए गए कामों पर वोट किया। जातीय एकता के खोखले नारों की जगह जनता ने- सड़क , बिजली, शौचालय, और कुकिंग गैस के उपलब्धता को अपने वोट देने का प्रमाण माना

मुस्लिम समाज में आशा:- मदरसों में अंगेरजी , साइंस व कंप्यूटर शिक्षा अनिवार्य किए जाने से मदरसों में दी जाने वाली शिक्षा का स्तर बढ़ा। मुस्लिम युवकों के एक हाथ में कुरान दूसरे में लैपटाप के संदेश से मुस्लिम युवा प्रभावित दिखे। तीन तलाक के विरुद्ध सरकारी प्रयास में मुस्लिम महिलाओं को अस्मिता की किरण दिखी। सबका साथ सबका विकास, सुविधाओं के बँटवारे में भेद भाव के बिना योजनाओं अशरक्षः क्रियान्वन ने भी , अल्पसंख्यकों को आश्वस्त किया। अब भा॰ ज॰ पा॰ उनके लिए अछूत नहीं रह गई।

महिलाओं का स्वाभिमान:- इस चुनाव में पहली बार महिलाओं ने पुरुषों से ज़्यादा संख्या में वोट किया। महिलाओं की जागरूकता के मूल में- बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ , माहवारी-स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता अभियान , मुफ्त सैनिट्री पैड वितरण आदि ने पुरानी रूढ़िवादी मान्यताओं एवं वर्जनाओं को तोड़ा। घर में शौचालय की व्यवस्था से भी महिलाओं में जागरूकता और नया आत्मविश्वास जगा।

स्वच्छता अभियान:- प्रधान मंत्री द्वारा लाल किले की प्राचीर से स्वच्छता अभियान का संदेश देने का पहले उपहास हुआ। परंतु प्रधानमंत्री के स्वयं इस अभियान में शामिल होने पर अन्य जनप्रतिनिधि भी इसमे शामिल हुए। धीरे धीरे स्वच्छता एक देशव्यापी अभियान बन गया। अब जनसाधारण भी सार्वजनिक स्थानों में गंदगी फैलाने में हिचकिचाता है।

सरकारी सुविधाओं का जनता को सीधा लाभ:- सड़क, बिजली, निःशुल्क गैस कनेक्शन तथा बगैर किसी बिचौलिये के सरकारी लाभ का उपभोक्ता के बैंक खाते में पहुंचाना एक क्रांतिकारी कदम साबित हुआ।

आयुष्मान योजना और प्रधान मंत्री औषधि केन्द्रों से बहुत सस्ती किन्तु कारगर दवाओं की उपलब्धता ने जनता पर चिकित्सा के भार को बहुत कम कर दिया। अब दिल में डाले जाने वाले स्टेंट व बहुत महँगी कैंसर की दवाओं के दामों में भी अभूतपूर्व कमी आई। हालाँकि कि प्राइवेट अस्पतालों द्वारा इसका दुरुपयोग होने की पूरी संभावना है , फिर भी इसके महत्व को नकारा नहीं जा सकता।

वृद्ध और कृषक पेंशन स्कीमः- मजदूरी करने में अक्षम वृद्ध मजदूर व कृषकों को पेंशन ने वृद्धों की आत्मनिर्भरता एवं सम्मान बढ़ाया

इस चुनाव की हमारी सभा की दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण जो बिन्दु उभर कर सामने आया वह है-

सवर्णों का उचित मूल्यांकनः- तुष्टिवाद को नकारने वाली पार्टी को सवर्णों की उपेक्षा से उपजी सवर्णों की नाराजगी से तीन हिन्दी भाषी प्रदेशों की चुनाव हार गई। इस हार से राजनैतिक पार्टियों ने सीखा कि इस वर्ग की उपेक्षा भी घातक हो सकती है।

पिछली सरकार के देश के अंतिम स्त्री और पुरुषों की दैनिक जीवन से जुड़े इन मूलभूत सुविधाओं के बारे में सोच और क्रियान्वन से पार्टी को मिली जीत पर किसी को न तो आश्चर्य होना चाहिए और न ही अविश्वास.

-o-o-o-o-o-